ढह गया पश्चिमी उत्तरप्रदेश में पानी का पुराना काम

सहारनपुर से लेकर ललितपुर तक और मथुरा से लेकर लखनऊ तक विगत में जो यात्राएं मैंने की उनमें नगर और देहात के क्षेत्र में स्थित कुएं, बावड़ियों और कुंडों के अभिकल्प पर भी मैंने ध्यान दिया। अधिकतर 'बोड़िए' कुएं मिले अर्थात कुएं के चूतरे पर इमारत न बनाकर इसकी 'नाल' के ऊपर चारों तरफ पक्का चबूतरा बनाकर नाल के मुंह के घेरे (रिम) पर पानी भरने के लिए लोहे की मोटी पट्टियों को चिमटानुमा बनाकर इनके बीच एक चक्री लगा दी जाती है। पीने का पानी लेने वाले कुछ ही कुओं पर मीनारें और इनके बीच में घिरणी लगाने के लिए 'शिलापट्ट' की व्यवस्था देखने में आई।

मसलन, कानपुर देहात से निकलकर घाटमपुर होकर जब भीतरगांव की ओर ईंटों का गुप्तकालीन मंदिर देखने गया तब रास्ते में एक गांव में पोखर किनारे शानदार कुआं देखा। इसी तरह ललितपुर में कुछ बड़े गांवों, जिला छतरपुर में धुवेला के निकट मऊ सहानिया के तालाब की पाल पर, और खजुराहो के निकट के अनेक गांवों के अलावा पन्ना और पन्ना बाघ अभयारण्य के भीतर भी अंग्रेजों से पहले और अङ्ग्रेज़ी जमाने में देसी तकनीक और साधनों से पक्के कुएं बनाए गए थे। टीकमगढ़ और संलग्न बलदेवगढ़ में कुआं-नुमा बावड़ियां देखने लायक हैं। बुंदेलखंड में मुझे विन्यास और वास्तु शिल्प के पैमाने पर सर्वाधिक सुंदर कुआं-बावड़ी टीकमगढ़ में दिखी। ऐसी सुंदर रचना मैंने मध्य भारत में कहीं न देखी है।

उन्नीसवीं सदी में अंग्रेज़ लोग अपर प्रोविंसेस और सेंट्रल इंडिया में जब घुमक्कड़ी कर रहे थे तब उन्होंने देहात में पानी के पुराने काम के विवरण दर्ज़ किए थे। जेम्स और हेलेन हॉलकॉम्ब ने उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में झांसी और आसपास क्रिश्चियन मिशनरी के रूप में काम शुरू किया तब उन्होंने झांसी नगर निवासियों द्वारा पीने का पानी लेने हेतु बहुत पुराने पांच लोकप्रिय कुओं का जिक्र सन 1905 में प्रकाशित अपनी किताब -'इन द हार्ट ऑफ इंडिया ऑर द बिगनिंग ऑफ द मिशनरी वर्क इन बुंदेला लैंड', में चित्र सहित किया। सन 1959-1960 में झांसी नगर और छावनी के बीच के क्षेत्र में ओरछा मार्ग पर एक बड़े और पुराने कुएं पर पनघट लगते हुये और इससे मात्र 500 मीटर की दूरी पर स्थित खेत में फसल की सिंचाई हेतु एक शैलो-वेल से चड़स से पानी निकालते हुये किसान को मैंने देखा था।

बुंदेलखंड में अधिकतर कुएं 'शैलो वेल्स' हैं क्योंकि पथरीली भूमि में भू-गर्भीय जल स्रोत तक पहुंचने के वास्ते चट्टानों को अधिक गहराई तक तोड़ने का लाभ नहीं, इसलिए अधिकतर कुएं, पक्के या कच्चे तालाबों की पाल पर बनाए गए। इनमें से अधिकतर अब उपेक्षित हैं। बुंदेलखंड (उत्तरप्रदेश) के अलावा लखनऊ से पश्चिम में जितने जिले स्थित हैं उनके बारे में ई. सन 1865 से 1910 तक की अवधि के बीच में ब्रिटिश इंडिया के दौर में प्रकाशित गजेटीयर और सेटलमेंट रिपोर्ट्स के अध्ययन से मालूम होता है कि किसी भी एक जनपद में पक्के

कुओं की औसत संख्या 6500-7000 से करीब रही। इस तरह से देखा जाये तो दोआब, रोहिलखंड, बुंदेलखंड, ब्रज और मेरठ डिवीज़न के विशाल क्षेत्र में कुओं की संख्या 3 लाख से अधिक बैठती है। कुओं की उपेक्षा का दौर सन 1960 के बाद शुरू हुआ और इसका सबसे बड़ा कारण रहा सिंचाई के लिए गंग-नहर का अप्रैल 1854 में और इससे करीब 40 बरस पहले पूर्वी जमुना नहर का चालू हो जाना। प्रसंगवश यह कहना उचित है कि ई. सन 1291 से लेकर 1911 के बीच उत्तर भारत में 15 बार अकाल या अकाल जैसे हालात पैदा हुये थे जिस दौरान बहुत से कुओं और पक्के तालाबों का निर्माण किया गया। लेकिन आगरा से पूर्व में करीब 20 किलोमीटर दूर स्थित इतमादपुर गांव का शानदार पक्का तालाब शाहजहां कालीन है। उल्लेखनीय है कि बीसवीं सदी के पूरा होने तक भी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में जागीरदार, नवाब, स्थानीय सेठ और लोक-संगठन कुएं, तालाब और बावड़ियों का निर्माण कर रहे थे जिन्हें नगर-गांव से बाहर, आस्था स्थलों के प्रांगण और व्यापारिक मार्गों के साथ-साथ बनवाया गया था।

अब 60 साल बाद केन्द्रीय सरकार द्वारा शुरू किए गए जलजीवन मिशन के अंतर्गत इनकी कितनी देखभाल हुयी है, यह तो स्थानीय आकलन से ही संभव है। लेकिन मीडिया का सक्रिय सूचना तंत्र इसके बारे उत्साहवर्द्धक न्यूज़ नहीं दे रहा है। अर्थात पानी के पुराने काम की समझ के समाप्त हो जाने से पीडबल्यूडी स्टाइल में जो हुआ वह काबिले तारीफ नहीं।

प्रदेश के उत्तर-पश्चिम में शिवालिक क्षेत्र से सटे हुये जनपद सहारनपुर , जमुना खादर, पश्चिमी और केन्द्रीय दोआब, रोहिलखंड, ब्रज और कानपुर से परे दक्षिणी जनपद जो कि बुंदेलखंड में आते हैं, की भू-भौतिकी अलग तरह की है। इन क्षेत्रों में विचरण करने से पानी के पुराने और विशुद्ध भारतीय वास्तुशैली में किए हुये काम के बारे में बहुत सी ऐसी रोचक जानकारी मुझे मिली है जिसका संबंध स्थानीय लोगों के भू-जल संबंधी ज्ञान और सालाना वर्षा से इसे जोड़े जाने से है। बुंदेलखंड में वर्षाजल के संग्रह की देसी तकनीक दोआब में तालाब बनाने की तकनीक से बिलकुल अलग है। जमुना-गंगा दोआब में कभी से भू-जल बहुत गहरा न होकर 18-40 फुट पर ही मिलता रहा है, इसलिए इस इलाके में कुएं गहरे नहीं हैं। बेशक अभी हाल के दशकों में अत्याधिक दोहन के कारण भू-जल स्तर 60-80 फुट की गहराई पर पहुंच चुका है।